

ISSN 2321-5764

भाषा भारती

राजभाषा उन्नयन की वार्षिक पत्रिका

23

अंक 6, वर्ष 6, फरवरी 2019



राजभाषा प्रकोष्ठ
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर

भाषा भारती

राजभाषा उन्वयन की वार्षिक पत्रिका

ISSN 2321-5704

(वर्ष-6, अंक-6, फरवरी, 2019)

संस्थापक

कुलपति, प्रो. आर.पी. तिवारी

परामर्शदाता

कुलसचिव, कर्नल राकेश मोहन जोशी

सम्पादक मण्डल

प्रो. ए.एन. शर्मा

डॉ. पंकज तिवारी

डॉ. ऋतु यादव

डॉ. अरविन्द कुमार

डॉ. अनुराग श्रीवास्तव

श्री आर.के. पाल

सम्पादक

डॉ. छविल कुमार मेहेर

सहायक सम्पादक

अभिषेक सक्सेना



राजभाषा प्रकोष्ठ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश)-470003

दूरभाष : (07582) 265828

ई-मेल : hindicell2015@gmail.com

आलेख	
समय की रेखा पर बदलती नारी	117
अनु वादव	
संविधान की उद्देशिका और कवि धूमिल	123
अफ़रोज बेगम	
समतामूलक समाज और आम्बेडकर के विचार	130
नंसी पटौदिया, दिवाकर शर्मा	

समीक्षा	
'चीख' : व्यापक जीवनानुभव की सृजनात्मक अभिव्यक्ति	137
अमरेंद्र त्रिपाठी	
बुन्देले रणवीरों के स्वातंत्र्य समर की गौरवशाली दास्तान	144
एकज सिंह	
प्रकृति, मनुष्य और विज्ञान का औदार्य	151
हिमांशु कुमार	

रिपोर्ट	
राजभाषा प्रकोष्ठ : कदम दर कदम	158
विनोद रजक	

• • •

संविधान की उद्देशिका और कवि धूमिल

—अफ़रीज बेगम

भारतीय संविधान में वर्णित है—भारत के लोग भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पंथ निरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए उसके समस्त नागरिकों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठता और अवसर की समता करने के लिए उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प लेकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख, 26 नवंबर 1949 ई. को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मसमर्पित करते हैं।

भारतीय संविधान की इस उद्देशिका को कुछ अराजक तत्व दरकिनार कर समाज में अराजकता, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायवाद, आतंकवाद, असमानता फैला रहे हैं और ऐसी परिस्थितियों के कारण बार-बार हम लोगों के जेहन में अनेक सवाल टकराते हैं कि क्या हम वाकई स्वतंत्र हैं? क्या भारतीय संविधान की उद्देशिका के अनुरूप हम भारत को समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बना पाये हैं? क्या सभी लोग समान रूप से विचारभिव्यक्ति कर पाते हैं एवं समान रूप से न्याय मिल पाया है? मेरा मानना है कि नहीं। समाज का प्रतिबिम्ब ही साहित्य है और समकालीन साहित्य में वह शक्ति लगातार नजर आ रही है, जो जंगलराज और अराजक तत्वों को जड़ सहित उखाड़ फेंकने के लिए लगातार प्रयासरत हैं। मेरे विचार से भारतीय समाज में रह रहे, बुद्धिजीवी वर्ग को चाहिए कि आम जनता को जागरूक करें। आज संविधान की उद्देशिका मात्र पन्नों पर ही सिमट कर रह गई है, अतः कानून और प्रशासन को जनहित के मद्देनजर एक कड़ा नियम बनाना चाहिए, ताकि सभी में एक डर बना रहे और संविधान के उल्लंघन पर उन्हें कड़ी से कड़ी सजा मिल सके। बात जब शोषण की हासिये पर खड़े लोगों की या फिर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विद्वपताओं की हो तो एक ऐसे ही समकालीन कवि हमारे जेहन में लगातार सामाजिक विद्वपताओं, राजनैतिक विद्वपताओं का बखिया उधेड़ते हुये नजर आते हैं, जिनके काव्य के इर्द-गिर्द समकालीन देश, समाज, लोकतंत्र, संसद का नग्न रूप हमारे सामने दिखाई देने लगता है, वह हैं “सुदामा पाण्डेय धूमिल”।

साहित्यकार अपने साहित्य में एक आदर्श राज्य को स्थापित करने का लगातार प्रयास करता है चाहे वह भक्तिकाल में हो या फिर आज के कवि हों, सभी ने अपने समय और समाज